॥ दोहा॥

॥ दोहा॥

गरुड़ वाहिनी वैष्णवी
त्रिकुटा पर्वत धामवत धाम
काली, लक्ष्मी, सरस्वती,
शक्ति तुम्हें प्रणाम
ेंप्रणाम
॥ चौपाई ॥

नमो: नमो: वैष्णो वरदानी,
कलि काल मे शुभ कल्याणी। काल मे शुभ कल्याणी।
मणि पर्वत पर ज्योति तुम्हारीरी,
पिंडी रूप में हो अवतारी॥

ो अवतारी॥

देवी देवता अंश दियो है
ै,
रत्नाकर घर जन्म लियो है।
ै।
करी तपस्या राम को पाऊँ,
त्रेता की शक्ति कहलाऊँ।लाऊँ।

कहाा राम मणि प
पर्वत जाओवत जाओ,
कलियुग की देवी कहलाओ।
लाओ।
विष्णु रूप से कल्कि बनकर बनकर,
लूंगा शक्ति रूप बदलकर॥

रूप बदलकर॥

तब तक त्रिकुटा घाटी जाओ,

गुफा अंधेरी जाकर पाओ।ंधेरी जाकर पाओ।
काली-लक्ष्मी-सरस्वती माँ,
करेंगी पोषण पार्वतीवती माँ॥

ब्रह्मा, विष्णुष्णु, शंकरंकर द्वारे,
हनुमतनुमत, भैरों प्रहरी प्यारे।री प्यारे।

रिद्धि, सिद्धि चंवरंवर डुलावें,
कलियुगयुग-वासी पूजत आवें॥जत आवें॥

पान सुपारी ध्वजा नारीयल,
चरणामृत चरणों का निर्मल।
ल।
दिया फलित वर मॉ मुस्काईत वर मॉ मुस्काई,
करन तपस्या पर्वत आई॥वत आई॥

कलि कालकी भड़की ज्वाला कालकी भड़की ज्वाला,
इक दिन अपना रूप निकाला।
काला।
कन्या बन नगरोटा आई,
योगी भैरों दिया दिखाई॥

खाई॥

रूप देख सुंदर ललचायांदर ललचाया,
पीछे-पीछे भागा आया।
कन्याओं केसाथ मिली मॉ
ली मॉ,
कौल-कंदौली तभी चली मॉ॥ंदौली तभी चली मॉ॥

देवा माई दर्शन दीनान दीना,
पवन रूप हो गई प्रवीणा।ो गई प्रवीणा।
नवरात्रों में लीला रचाईं में लीला रचाई,
भक्त श्रीधर केघर आई॥त श्रीधर केघर आई॥

योगिन को भण्डारा दीनी
न को भण्डारा दीनी,
सबने रूचिकर भोजन कीना।
कर भोजन कीना।
मांसंस, मदिरा भैरों मांगींगी,
रूप पवन कर इच्छा त्यागी॥

बाण मारकर गंगांगा निकलीकली,
पर्वत भागी हो मतवाली।ो मतवाली।
चरण रखे आ एक शीला जब,
चरण-पादुका नाम पड़ा तब॥

पीछे भैरों था बलकारी,
चोटी गुफा में जाय पधारी।

नौ मह तक किया निवासा
वासा,
चली फोड़कर किया प्रकाशा।।या प्रकाशा।।

आद्या शक्ति-ब्रह्म कुमारी,
कहलाई माँ आद कुंवारी।ंवारी।
गुफा द्वार पहुँची मुस्काईुँची मुस्काई,

लांगुर वीर ने आज्ञा पाई।।ंगुर वीर ने आज्ञा पाई।।

भागा-भागा भैंरो आया,
रक्षा हित निज शस्त्र चलाया।
चलाया।
पड़ा शीश जा पर्वत ऊपरवत ऊपर,
किया क्षमा जा दिया उसे वर।।या उसे वर।।

अपने संग में पुजवाऊंगीं
गी,
भैंरो घाटी बनवाऊंगी।ंगी।
पहले मेरा दर्शन होगाोगा,
पीछे तेरा सुमिरन होगा।।

ोगा।।

बैठ गई माँ पिण्डीण्डी होकरोकर,
चरणों में बहता जल झर झर।ता जल झर झर।
चौंसठ योगिनी
नी-भैंरो बर्वतवत,
सप्तऋषि आ करते सुमरन।।

आ करते सुमरन।।

घंटा ध्वनि पर्वत पर बाजेवत पर बाजे,
गुफा निराली सुंदर लागे।ं
दर लागे।
भक्त श्रीधर पूजन कीनजन कीन,
भक्ति सेवा का वर लीन।। सेवा का वर लीन।।

सेवक ध्यानूं तुमको ध्यानां तुमको ध्याना,
ध्वजा व चोला आन चढ़ाया।ाया।

सिंह सदा दर पहरा देतारा देता,

पजा शेजा शेर का दु:ख हर लेता।।र लेता।।

जम्बू द्वीप महाराज मनाया
ाराज मनाया,
सर सोने का छत्र चढ़ाया ।
ाया ।
हीरे की मूरत संग प्यारींग प्यारी,
जगे अखण्ड इक जोत तुम्हारी।।ारी।।

आश्विन चैत्र नवरात्रे आऊँे आऊँ,
पिण्डी रानी दर्शन पाऊँ न पाऊँ
सेवक' कमल' शरण तिहारी
ारी,
हरो वैष्णो विपत हमारी।।मारी।।

।। दोहा ।।

कलियुग में महिमा तेरीयुग में महिमा तेरी,
है माँ अपरंपारंपार
धर्म की हानि हो रहीी,
प्रगट हो अवतारो अवतार
।। इति श्री वैष्णो श्री वैष्णो देवी चालीसा ।।